

# जागरण सिटी

29 जनवरी, 2008

भोपाल

ब्राइडल को लुभा रहा थीम मेकअप 16

क्लासीफाइड 17

राम के अनन्य भक्त स्वामी रामानन्द 18



दैनिक जागरण

**अवर गेस्ट**  
**सैय्यद हैदर रजा**  
(विश्व प्रसिद्ध भारतीय पेंटर)



विश्व प्रसिद्ध भारतीय पेंटर सैय्यद हैदर रजा का कहना है कि अमेरिका विदेशी दिमागों का सही उपयोग करता है, जबकि भारत में उनकी ठीक से कद्र नहीं होती। फ्रांस में बसे पेंटर हैदर रजा रंगायन संस्था के कार्यक्रम में भाग लेने भोपाल आए हुए हैं। पेश है उनसे बातचीत के खास अंश -

## मुझे अफसोस है कि हुसैन विदेश में हैं...

जागरण सिटी

**टैलेंट की कद्र होना चाहिए**

सैय्यद हैदर रजा से एमएफ हुसैन के विदेश में होने पर टिप्पणी करने पर पहले तो उन्होंने मना कर दिया, परंतु फिर कहा कि हुसैन बहुत बड़े चित्रकार हैं। पूरा विश्व उनकी कद्र करता है। मुझे अफसोस है कि वे विदेश में हैं।

**मैं पेरिस में श्लोक पढ़ता हूँ**

ग्लोबलाइजेशन कोई बुरी बात नहीं है। अच्छे विचार जहाँ से मिले स्वीकार करना चाहिए। भारत तो विचारों के मामले में शुरू से ही विश्व को लीड करता रहा है। दूसरों का असर अपने ऊपर हो, इससे अच्छा है कि दूसरे को अपने रंग में रंग लो। मैं पेरिस में हिंदी बोलता हूँ। वहाँ श्लोक भी पढ़ कर सुनाता हूँ। भारतीय ज्ञान की दुनिया भर में कद्र है। जिन लोगों ने कभी भारत या भारतीय ज्ञान की

अवहेलना की थी, वो ही आज इसे इज्जत की निगाह से देखते हैं। पेरिस में सालों साल काम करके पाया कि मेरे देश की खुशबू इसमें नदारद है। फिर मैं भारत आया और यहाँ के मंदिर, जंगल, अजंता एलोरा जैसे स्थान देखे। मैंने भगवत गीता पढ़ी, इसके बाद मेरे अंदर जो ज्ञान आया उसने ही मेरे

जीवन उनका आभारी रहूँगा, अब मैं उनके लिए दमोह में एक स्मारक बनाने जा रहा हूँ।

**युवा चित्रकारों को सीख**

रजा का मानना है कि युवा चित्रकार कुछ ज्यादा ही जल्दी में रहते हैं। वो भूल जाते हैं कि चाहे मैं हूँ या कोई और, हमने सालों की

बढ़ावा चाहिए। इससे उसका काम ओरिजनल तो होता ही है, साथ में काम में रिचनेस भी आती है।

**भोपाल इज ग्राइंडिंग**

सैय्यद हैदर रजा हर साल भोपाल आते हैं। यह पूछने पर कि प्रत्येक वर्ष वो भोपाल में क्या फर्क पाते हैं, वे कहते हैं कि भोपाल के चित्रकार बहुत तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। मैं फ्रांस, अमेरिका और कई देश प्रत्येक वर्ष जाता रहता हूँ, परंतु जितनी तेजी से भोपाल के कलाकार परिपक्व हो रहे हैं उतने कहीं और के नहीं। यहाँ के कलाकार खास तौर पर अखिलेश, मनीष पुष्कले, सीमा घुरेय्या, सुजाता बजाज, स्मृति दीक्षित और संजू जैन का नाम लेना चाहूँगा जो बहुत ही खास अंदाज में आगे बढ़ रहे हैं। इनके चित्रों में वास्तविकता है।

## युवा चित्रकार तेज न दौड़ें

काम को बेहतर बनाया। इसी के बाद मैंने बिंदु और कुंडलिनी जैसी सीरीज बनाई, जिसकी दुनिया भर में प्रशंसा हुई।

**गुरु के लिए स्मारक बनाना है**

मैं आज जो कुछ भी हूँ, मेरे गुरुओं की वजह से हूँ। दमोह में मेरे गुरु बेनी प्रसाद जी ने जो कुछ सिखाया, मुझे उस पर गर्व है। सारा

मेहनत के बाद यह मुकाम हासिल किया है। शुरुआती दौर में काम की बारीकियाँ समझ नहीं आती, यह परिपक्वता समय के साथ ही आती है। दूसरा युवा चित्रकारों को यह सीख भी देना चाहूँगा कि शुरू में वो अपनी पेंटिंग्स का रेट एकदम से न बढ़ाए। इससे बाद में उनको नुकसान होता है। यह मैं पेरिस में देख चुका हूँ। हर चित्रकार को अंतर्ज्ञान